इंडिया के सन्दर्भ में भी गांधीजी ने कहा था कि इन पत्रों के जरिये मैंने जनता को यथाशक्ति सत्याग्रह की तालीम देना शुरू किया। इनमें विज्ञापन न लेने का मेरा आग्रह शुरू से ही था। मैं मानता हूं कि इससे कोई हानि नहीं हुई और इस प्रथा के कारण दोनों पत्रों के विचार स्वातन्त्र्य की रक्षा करने में बहुत मदद मिली। इन पत्रों द्वारा मैं अपनी शान्ति प्राप्त कर सका। यद्यपि मैं सविनय अवज्ञा को तुरंत ही शुरू न कर पाया, फिर भी मैं अपने विचार स्वतन्त्रतापूर्वक प्रकट कर सका। (संक्षिप्त आत्मकथा, पृष्ठ 178-179)

सत्य ही परमेश्वर

गांधीजी आजीवन सत्य के सहचर रहे। अहिंसा के आराधक रहे। मैत्री और मुदिता जैसे मूल्यों के महत्व देते रहे। करुणा को हृदय में धारण कर सहिष्णुता का विकास करने वाले सिद्ध हुए। उनके ईश्वर दीन-दु:खियों में और ईश्वर की प्राप्ति की साधना दीन-हीनों की सेवा के रूप में है। वे सेवा, सत्कर्म, सत्प्रयास से कभी मुक्त होना नहीं चाहते थे। उनका मत है : मैंने सत्य से भिन्न किसी परमेश्वर का कभी अनुभव नहीं किया। यदि (मेरे लिखे) प्रत्येक पृष्ठ से पाठकों को यह प्रतीति न हुई हो कि सत्यमय बनने के लिए अहिंसा ही एकमात्र मार्ग है तो मैं इस प्रयत्न को व्यर्थ समझता हूं। प्रयत्न चाहे व्यर्थ हो, किन्तु वचन व्यर्थ नहीं है।

मेरी अहिंसा सच्ची होने पर भी कच्ची है, अपूर्ण है। अत: हजारों सूर्यों को एकत्र करने से भी जिस सत्य रूपी सूर्य के तेज का पूरा माप नहीं निकल सकता, सत्य की मेरी झांकी ऐसे सूर्य की एक किरण मात्र के दर्शन के समान है। उसका सम्पूर्ण दर्शन सम्पूर्ण अहिंसा के बिना असम्भव है। ऐसे व्यापक सत्यनारायण के प्रत्यक्ष दर्शन के लिए जीवमात्र के प्रति आत्मवत् प्रेम की आवश्यकता है और जो मनुष्य ऐसा करना चाहता हे, वह जीवन के किसी भी क्षेत्र से बाहर नहीं रह सकता।

यही कारण है कि सत्य की मेरी पूजा मुझे राजनीति में खींच ले गई है। मुझे यह कहते हुए संकोच नहीं होता और न ही मैं ऐसा कहने में कोई अविनय देखता हूं कि जो मनुष्य यह कहता है कि धर्म का राजनीति से कोई संबंध नहीं है, वह धर्म को नहीं जानता। आत्मशुद्धि के बिना जीवमात्र के साथ ऐक्य सध नहीं सकता। आत्मशुद्धि के बिना अहिंसा-धर्म का पालन सर्वथा असंभव है। अशुद्धात्मा परमात्मा के दर्शन करने में असमर्थ है।

देश की आजादी का आंदोलन हो अथवा मजदूरों-खेतीहारों की समस्याएं, संविधान की रचना का सवाल हो या विभाजन जैसी पीड़ा के सवाल, देश के पुनर्गठन के प्रश्न हो या सुशासन के सवाल, गांधीवादी दर्शन प्रत्येक पक्ष पर सफलता के साथ भारत ही नहीं, अफ्रीका जैसे महाद्वीपीय देशों के लिए अनुकरणीय बना। गांधीजी वस्तुत: एक संस्कार का नाम है। गांधीजी शब्द का प्रयोग संस्कारित जीवन के सन्दर्भ में लिया जाने लगा है। एक महामानव के सद्प्रयासों से ही संभव हुआ है। वैश्विक समुदाय आज गांधी विचारधारा को विश्व हित में देखता है और उससे बहुविध आशा करता है। भारत को इस महामानव की जन्मभूमि होने पर आत्माभिमान है।